आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 2 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *आज से अपसेट होने की वजाय स्वमान के सीट पर सेट रहने की पुरुषार्थ करे*

भगवानुवाच ...

" स्वमान के सीट पर सेट रहो तो सर्व शक्तियाँ तुम्हारी ऑर्डर मानती रहेंगी "

सर्वश्रेष्ठ सीट है स्वमान की सीट। स्वमान की स्थिति हमें अभिमान से भी मुक्त कर देती है। और यही वह सीट है जिसके नीचे दव कर अनेक समस्यायें भी नष्ट हो जाती है।

तो आईये स्वमान की सीट पर बैठने की प्रैक्टिस करे। जब इतनी सुन्दर सीट हमें मिलती है तो उससे नीचे उतरे ही क्यों? यह हमारी स्थिति की सीट होती है।

याद करे बाबा के महावाक्य ...

" स्व-स्थिति श्रेष्ठ है तो परिस्थितियाँ स्वतः ही बदल जाती है "

और श्रेष्ठ स्व-स्थिति बनाने का आधार है .... स्वमान। तो हम स्वमान का अभ्यास करते रहे। स्थिति श्रेष्ठ बनती रहेगी। और इसके बाद परिस्थितियाँ रहेंगी ही नहीं।

बाबा के बहुत सुन्दर महावाक्य है ....

"जो स्वमान की सीट पर सेट है ज्ञान सूर्य की किरणें छत्रछाया है"

जो स्वमान की सीट पर सेट रहते है बाप उनका जिम्मेदार है। और जो अपसेट रहते है उनके जिम्मेदार वो स्वयं है।

हम इन बातों पर विशेष ध्यान दे। जो स्वमान में रहते है सफलता परछाई की तरह उनके आगे-पीछे चलती है। मान परछाई की तरह उनके साथ जुड़े रहते है।

तो हम स्वमान पर बहुत ध्यान दे। जो स्वमान बाबा हमें दिये है, उन्हें स्वीकार करे। उन पर चिन्तन करे।

एक स्वमान ले ले ...." **मैं विजयी रतन हूँ** "

.... इसपर चिन्तन करे .... किसने कहा यह .. स्वयं भगवान जो हमें जानते है उसने याद दिलाया ...

" बच्चे तुमने इस माया को कल्प-कल्प जीता है .. तुम विजयी हो .. तुम्हारे अंदर माया को जीतने की शक्ति है .. तुम्हारी यह याद में विजयमाला बनी हुई है .. सोचो .. तुम्हारे मणको को स्मरण करके भक्त भी समस्याओं से मुक्त हो जाते है .. उन्हें भी सिद्धि मिल जाती है .. वो भी सुखी हो जाते है .. तुम तो स्वयं ही विजयमाला के मणके हो "

तो हमें स्वीकार करके इस तरह चिन्तन करना है। और फिर इसके नशें में रहना है ...

" मैं विजयी रतन हूँ .. माया मेरे से कमजोर है .. मैं बहुत शक्तिशाली हूँ "

दुसरा स्वमान है ....

" मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ "

आज सारा दिन इन दोनों स्वमान का अभ्यास करते रहेंगे। जब हम इस अभ्यास में स्थित होते है ....

" मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ.. और.. ज्ञान सूर्य की किरणें हम पर आती है "

तो यह किरणें जो चारों ओर फैलती है उनसे ही इस संसार से माया के जर्मस, कीटाणु नष्ट हो जाते है।

तो अगर हम ऐसे स्वमानों की प्रैक्टिस करते है तो हम ईश्वरीय कार्य में बहुत बड़ा योगदान देते है। अनेक आत्माओं को माया से बचाने का श्रेष्ठ कार्य करते है।

हमसे निकली हुई शक्तियों के किरणें चारों ओर के वायुमंडल को पावरफूल बनाती है।

भगवानुवाच है ...

" अगर तुम्हें किसी स्थान के वायब्रेशन्स को बदलना है तो वहाँ यह अभ्यास करो .....मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ "

तो आज सारा दिन हम यह दो स्वमान याद करेंगे ....

" मैं विजयी रतन हूँ .. विजय की शक्ति मेरे पास है .. विजय हमारे ही है "

सोच ले, भगवान ने कह दिया है ....

" विजय तुम्हारी ही है "

तो हमें उनके शब्दों में सम्पूर्ण विश्वास रखना चाहिए।

दूसरा ....

" मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ .. सूर्य के समान तेजस्वी "

अपने को ऐसे ही चमकती हुई आत्मा भी देखेंगे, और फ़ील भी करेंगे ....

" मेरे अंग अंग से रंग बिरंगी किरणें फैल रही है .. जिनसे चारों ओर के माया की कीटाणु नष्ट हो रहे है .. वह जल के मर रहे है "

ऐसे ही ...

" परमधाम से ज्ञान सूर्य की किरणें नीचे मुझ पर पड़ रही है .. लगातार किरणों की बौछार हो रही है .. और मुझसे चारों ओर फैल रही है "

यह अभ्यास करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org